ज्ञान-आधारित वाणिज्य में व्यावसायिक तनाव और 'निष्काम कर्म': आधुनिक मानव संसाधन प्रबंधन के परिप्रेक्ष्य में एक वैचारिक अध्ययन

डॉ. मीना कीर
सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य
प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस
शासकीय नर्मदा महाविद्यालय, नर्मदापुरम (म.प्र.)

सारांश (Abstract)
21वीं सदी के ज्ञान-आधारित वाणिज्य (Knowledge Commerce) और कॉर्पोरेट तंत्र में मानसिक तनाव, भावनात्मक थकावट (Burnout) और प्रतिभा-पलायन (Attrition) गंभीर संरचनात्मक संकट बन चुके हैं। पश्चिमी प्रबंधन दर्शन मुख्य रूप से 'परिणाम-आधारित प्रतिफल' (Outcome-Driven Motivation) पर आधारित है, जहाँ व्यक्ति का आत्म-मूल्यांकन केवल बाह्य परिणामों (पदोन्नति, वित्तीय लाभ, प्रतिष्ठा) से बंधा होता है। यह व्यवस्था कार्यस्थल पर तीव्र असुरक्षा और मानसिक दबाव को जन्म देती है। प्रस्तुत शोध-पत्र श्रीमद्भगवद्गीता के केंद्रीय सिद्धांत '**निष्काम कर्म**' को एक आधुनिक संगठनात्मक उपकरण के रूप में प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन विशुद्ध रूप से वैचारिक और गुणात्मक विश्लेषण पर आधारित है, जो यह स्पष्ट करता है कि कैसे कर्तव्य-बोध, फल-अनासक्ति और मानसिक समत्व का समन्वय कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा करते हुए वाणिज्यिक दक्षता को दीर्घकालिक स्थिरता प्रदान कर सकता है।

मुख्य शब्द (Keywords): निष्काम कर्म, ज्ञान-आधारित वाणिज्य, व्यावसायिक तनाव, मानव संसाधन प्रबंधन, फल-अनासक्ति, समत्वम्, भारतीय प्रबंधन दर्शन।

1. प्रस्तावना (Introduction)

आधुनिक वाणिज्य केवल वस्तुओं के भौतिक विनिमय तक सीमित नहीं है; यह सूचना प्रौद्योगिकी, वित्तीय सेवाओं और रणनीतिक परामर्श जैसे ज्ञान-गहन क्षेत्रों पर केंद्रित हो चुका है। इन क्षेत्रों में कार्य की प्रकृति अमूर्त है, जहाँ सफलता अक्सर बाह्य कारकों—जैसे वैश्विक आर्थिक उतार-चढ़ाव, तकनीकी व्यवधान और बाजार की अप्रत्याशित नीतियों—पर निर्भर करती है।

इस व्यवस्था की सबसे बड़ी विसंगति यह है कि कर्मचारी से अपने प्रयास में पूर्ण समर्पण की अपेक्षा की जाती है, लेकिन उसका मूल्यांकन केवल अंतिम परिणाम (Key Performance Indicators/OKRs) के आधार पर होता है। जब अथक प्रयासों के बावजूद बाजार की प्रतिकूलता के कारण वांछित परिणाम नहीं मिलते, तो कर्मचारी गंभीर मानसिक तनाव और अवसाद का शिकार होता है।

श्रीमद्भगवद्गीता का 'निष्काम कर्म' सिद्धांत अकर्मण्यता या वैराग्य का उपदेश नहीं देता। इसके विपरीत, यह कर्म में उच्चतम कुशलता लाते हुए उस मानसिक व्यग्रता को समाप्त करने का मनोविज्ञान है, जो भविष्य के परिणामों की चिंता से उत्पन्न होती है। वाणिज्य और संगठनात्मक व्यवहार में इस सिद्धांत का उपयोग तनाव प्रबंधन और कार्य-संस्कृति सुधार के लिए एक सशक्त वैचारिक विकल्प प्रस्तुत करता है।

2. शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

प्रस्तुत शोध-पत्र निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्यों पर केंद्रित है:

1 आधुनिक ज्ञान-आधारित वाणिज्य में अत्यधिक परिणाम-केंद्रित कार्य-संस्कृति से उत्पन्न व्यावसायिक तनाव और बर्नआउट के अंतर्निहित कारणों का सैद्धांतिक विश्लेषण करना।

2 श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित 'निष्काम कर्म' के त्रिविमितीय तत्वों (कर्तव्य-बोध, फल-अनासक्ति एवं समत्वम्) को आधुनिक संगठनात्मक व्यवहार के परिप्रेक्ष्य में विखंडित और पुनःपरिभाषित करना।
3 परिणाम-निरपेक्ष दृष्टिकोण और आधुनिक मानव संसाधन प्रबंधन (विशेष रूप से कार्य-मूल्यांकन एवं कर्मचारी कल्याण) के मध्य एक व्यावहारिक वैचारिक मॉडल (Conceptual Model) विकसित करना।
4 कॉर्पोरेट संगठनों में कर्मचारियों के मानसिक संतुलन, नवाचार क्षमता और दीर्घकालिक उत्पादकता को सुदृढ़ करने हेतु नीतिगत एवं प्रबंधकीय सुझाव प्रस्तुत करना।

3. शोध प्रविधि (Research Methodology)
प्रस्तुत अध्ययन पूर्णतः **गैर-सांख्यिकीय, वैचारिक एवं व्याख्यात्मक (Conceptual, Analytical, and Hermeneutic)** शोध प्रविधि पर आधारित है:
शोध का प्रारूप (Research Design): यह एक गुणात्मक-वैचारिक (Qualitative-Conceptual) शोध है, जिसमें प्राचीन दार्शनिक ग्रंथों की शिक्षाओं का आधुनिक वाणिज्यिक सिद्धांतों के साथ अंतर्विषयक (Interdisciplinary) तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।
समंक एवं सामग्री के स्रोत (Data Sources): अध्ययन द्वितीयक स्रोतों (Secondary Sources) पर आधारित है:
शास्त्रीय स्रोत: श्रीमद्भगवद्गीता के मूल संस्कृत श्लोक एवं उनके प्रतिष्ठित भाष्यों का प्रासंगिक अध्ययन (विशेषतः द्वितीय एवं तृतीय अध्याय)।
आधुनिक अकादमिक साहित्य: मानव संसाधन प्रबंधन, संगठनात्मक मनोविज्ञान, व्यावसायिक नैतिकता और इंडियन नॉलेज सिस्टम्स (IKS) से संबंधित पीयर-रिव्यूड जर्नल्स, शोध-पत्रों और संदर्भ ग्रंथों का समीक्षात्मक विश्लेषण।
विश्लेषण की विधि (Analytical Approach): हर्मेनेयूटिक्स (Hermeneutics) एवं विषय-वस्तु विश्लेषण (Thematic Analysis) विधि का प्रयोग करते हुए प्राचीन भारतीय कार्य-मनोविज्ञान को समकालीन कॉर्पोरेट समस्याओं (बर्नआउट, कार्य-तनाव, कार्य-जीवन संतुलन) के समाधान हेतु संश्लेषित (Synthesized) किया गया है।

4. आधुनिक वाणिज्यिक संकट: परिणाम-केंद्रित अभिप्रेरणा का द्वंद्व
पारंपरिक प्रबंधन के अभिप्रेरणा सिद्धांत (जैसे विक्टर व्रूम का प्रत्याशा सिद्धांत या स्किनर का सुदृढ़ीकरण सिद्धांत) यह मानते हैं कि व्यक्ति केवल तभी कार्य करता है जब उसे प्रत्यक्ष बाह्य प्रतिफल की आशा हो। ज्ञान-अर्थव्यवस्था में यह सोच निम्नलिखित समस्याएँ खड़ी करती है:
नियंत्रण-भ्रम (Illusion of Control): आधुनिक पेशेवर यह मान बैठता है कि अंतिम परिणाम पूरी तरह उसके नियंत्रण में है। जब परिणाम प्रतिकूल आते हैं, तो वह स्वयं को अक्षम मानने लगता है।
प्रक्रिया की उपेक्षा: केवल लक्ष्य प्राप्ति (Targets) पर ध्यान होने से कार्य की गुणवत्ता, नैतिक मानकों और दीर्घकालिक संस्थागत मूल्यों की अनदेखी होती है।
मानसिक टूटन (Psychological Breakdown): विफलता के निरंतर भय के कारण रचनात्मकता समाप्त हो जाती है और केवल रक्षात्मक कार्यशैली शेष रह जाती है।
5. निष्काम कर्म के वैचारिक स्तंभ और वाणिज्यिक समन्वय
श्रीमद्भगवद्गीता के दर्शन को वाणिज्यिक कार्य-प्रणाली के अनुकूल तीन प्रमुख आयामों में समझा जा सकता है:
(क) कर्तव्य-बोध बनाम संविदात्मक विनिमय (Duty Orientation vs. Transactional Exchange)
दार्शनिक आधार: कार्य को केवल धन कमाने का साधन न मानकर अपने स्वधर्म (व्यावसायिक दायित्व) का उत्कृष्ट निर्वहन मानना।

वाणिज्यिक अनुप्रयोग: कर्मचारी केवल 'उतना ही काम' करने की मानसिकता से बाहर निकलता है जितने के लिए उसे अनुबंध द्वारा बाध्य किया गया है। इससे कार्य की गुणवत्ता में स्वतः वृद्धि होती है क्योंकि प्रेरणा का स्रोत बाह्य निगरानी न होकर आंतरिक व्यावसायिक निष्ठा बन जाती है।

(ख) फल-अनासक्ति (Outcome Detachment)

दार्शनिक आधार: *'मा फलेषु कदाचन*—अर्थात कर्म के अंतिम परिणाम के प्रति अंधी आसक्ति या चिंता से मुक्त रहना।

वाणिज्यिक अनुप्रयोग: इसका अर्थ लाभ या पारिश्रमिक का त्याग करना नहीं है, बल्कि कार्य निष्पादन के दौरान 'विफलता के भय' या 'सफलता के लोभ' को हावी न होने देना है। जब मस्तिष्क परिणाम के भय से मुक्त होता है, तो उसकी समस्या-समाधान क्षमता और नवाचार अपने उच्चतम स्तर पर होते हैं।

(ग) समत्वम् (Mental Equanimity)

दार्शनिक आधार: *'समत्वं योग उच्यते*—सफलता और विफलता, लाभ और हानि दोनों में चित्त की स्थिरता बनाए रखना।

वाणिज्यिक अनुप्रयोग: आधुनिक वाणिज्य में बाजार के चक्र अनिश्चित होते हैं। समत्व की भावना अधिकारियों को मंदी या असफलता के समय अवसादग्रस्त होने से बचाती है और तीव्र सफलता के दौर में आत्ममुग्ध होने से रोकती है।

6. वैचारिक मॉडल: निष्काम कर्म आधारित कार्य-संस्कृति

प्रस्तुत अध्ययन निष्काम कर्म के आधार पर आधुनिक वाणिज्यिक संगठनों के लिए एक त्रि-स्तरीय वैचारिक मॉडल प्रस्तावित करता है:

6.1 संज्ञानात्मक स्तर (व्यक्तिगत आयाम):

प्रयास और परिणाम के बीच अंतर समझना।

जो नियंत्रण में है (परिश्रम, कौशल, ईमानदारी) उस पर पूर्ण ऊर्जा लगाना।

जो नियंत्रण से बाहर है (बाजार रुख, नियामक निर्णय) उसे स्वीकार करने की मानसिक तत्परता।

6.2 प्रक्रियात्मक स्तर (प्रबंधकीय आयाम):

मूल्यांकन प्रणालियों में केवल अंतिम वित्तीय अंकों के बजाय 'प्रक्रियात्मक गुणवत्ता' और 'व्यावसायिक शुचिता' को प्राथमिकता देना।

भय-आधारित कार्य-संस्कृति के स्थान पर मनोवैज्ञानिक सुरक्षा (Psychological Safety) का निर्माण।

6.3 संस्थागत स्तर (वाणिज्यिक मूल्य):

अल्पकालिक तिमाही लाभ के स्थान पर दीर्घकालिक मूल्य निर्माण और सामाजिक कल्याण (*लोकसंग्रह*) को व्यावसायिक उद्देश्य बनाना।

7. प्रबंधकीय निहितार्थ (Managerial Implications)

7.1 मानव संसाधन नीतियों का पुनर्गठन: मानव संसाधन विभागों को कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए केवल बाह्य उपाय (मनोरंजन, योग सत्र) करने के बजाय उनके कार्य-दर्शन को सशक्त करने पर ध्यान देना चाहिए। निष्काम कर्म की वैचारिक समझ कर्मचारियों में आंतरिक लचीलापन विकसित करती है।

7.2 नैतिक संकटों का समाधान: जब कोई पेशेवर केवल परिणाम के पीछे भागता है, तो वह वित्तीय धोखाधड़ी, भ्रामक विपणन या डेटा हेरफेर जैसे अनैतिक रास्तों की ओर प्रवृत्त होता है। निष्काम कर्म प्रक्रिया की शुचिता पर बल देकर कॉर्पोरेट गवर्नेंस को मजबूत करता है।

7.3 नेतृत्व शैली में परिवर्तन: आधुनिक प्रबंधकों को आदेश देने वाले नियंत्रक के बजाय परामर्शदाता की भूमिका निभानी चाहिए, जो कर्मचारियों को परिणाम के भय से मुक्त होकर स्वतंत्र रूप से नवाचार करने का वातावरण दे सके।

8. निष्कर्ष (Conclusion)

आधुनिक वाणिज्य का संकट पूँजी या तकनीक की कमी नहीं, बल्कि मानव चेतना का अत्यधिक तनावग्रस्त और परिणाम-आसक्त होना है। श्रीमद्भगवद्गीता का 'निष्काम कर्म' कोई धार्मिक या संन्यासी अवधारणा नहीं, बल्कि कार्य-कुशलता और मानसिक संतुलन का एक व्यावहारिक विज्ञान है। जब कोई वाणिज्यिक संगठन अपने कार्य-व्यवहार में इस दृष्टिकोण को आत्मसात करता है, तो कार्य एक मानसिक बोझ बनने के बजाय आत्म-संतुष्टि और संस्थागत उत्कृष्टता का माध्यम बन जाता है।

संदर्भ सूची (References)

1. Chakraborty, S. K. (1995). *Ethics in management: Vedantic perspectives*. Oxford University Press.
2. Garg, P., & Parikh, I. J. (1995). *Young managers at the crossroads: The trishanku complex*. Allied Publishers.
3. Maslach, C., Schaufeli, W. B., & Leiter, M. P. (2001). Job burnout. *Annual Review of Psychology*, 52(1), 397–422.
4. Muniapan, B., & Dass, M. (2008). Corporate social responsibility: A story from the Mahabharata. *Social Responsibility Journal*, 4(1/2), 17–24.
5. Radhakrishnan, S. (1948). *The Bhagavadgītā: With an introductory essay, Sanskrit text, English translation and notes*. George Allen & Unwin.
6. Sharma, S. (1996). *Management in new age: Western windows, Eastern doors*. New Age International Publishers.
7. Sharma, S. (2002). Corporate Gita: Lessons for management, administration, and leadership. *Journal of Human Values*, 8(2), 163–172.

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.